

## 6

## हे मन तेरी को कुटेव

हे मन तेरी को कुटेव यह, करनविषय में धावै है ॥टेक॥  
 इनही के वश तू अनादि तैं, निजस्वरूप न लखावै है ।  
 पराधीन छिन छिन समाकुल, दुर्गति विपति चखावै है ॥१॥  
 फरस विषय के कारन बारन, गरत परत दुःख पावै है ।  
 रसना इन्द्रियवश झष जल में, कंटक कंठ छिदावै है ॥२॥  
 गन्धलोल पंकज मुद्रित में, अलि निज प्रान खपावै है ।  
 नयनविषयवश दीप-शिखा में, अंग पतंग जरावै है ॥३॥  
 करन विषयवश हिरन अरन में, खलकर प्रान लुटावै है ।  
 'दौलत' तज इनको जिन को भज, यह गुरु सीख सुनावै है ॥४॥



हे मन! यह तेरी कैसी बुरी आदत है कि तू पंच इन्द्रिय—विषयों में ही दौड़ लगाता है।

इन्हीं के वशीभूत होने के कारण तू अनादि काल से अपने वास्तविक स्वरूप को नहीं देख पा रहा है तथा इन इन्द्रिय—विषय के पराधीन होकर जो कि तुझे प्रत्येक क्षण आकुलता पैदा करने वाले हैं और दुर्गति के दुःखों का अनुभव कराने वाले हैं।

हे मन! जैसे स्पर्शन इन्द्रिय के विषय के कारण हाथी हथनी के पीछे गढ़्ढे में गिरकर बहुत दुःख पाता है। रसना इन्द्रिय के वशीभूत होकर मछली जल में रहती हुई भी कांटे से अपने कण्ठ का छेदन करवाती है।

घ्राण इन्द्रियवश गन्ध का लोभी भ्रमर कमल में बन्द होकर अपने प्राण गँवा देता है। चक्षु इन्द्रिय के विषयवश पतंगा दीपक की लौ में गिरकर अपना शरीर जला देता है।

कर्ण इन्द्रिय के विषयवश हिरण जंगल में दुष्टों के चंगुल में फँसकर अपने प्राण गँवा देता है।

अतः कविवर दौलतराम जी कहते हैं कि हे मन! सदगुरु तुझे ऐसी शिक्षा दे रहे हैं कि तू इन इन्द्रिय विषयों का त्याग कर और जिनेन्द्र भगवान का ही भजन कर।